International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 3, Issue- 1 | January - February 2026 ISSN: 3048-9490

भारतीय समाजवादी आंदोलन और गांधी : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. अमित रंजन सिंह
विभागाध्यक्ष सह सहायक प्राध्यापक (Sr. Scale)
विश्वविद्यालय गांधी विचार विभाग, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार-07

शोध सारांश

यह शोध पत्र आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन के ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में महात्मा गांधी और भारतीय समाजवादी आंदोलन के वैचारिक अंतर्संबंधों का विश्लेषण करता है। आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचार का उदय औपनिवेशिक दासता, सभ्यतागत संकट और पश्चिमी आधुनिकता की चुनौती की पृष्ठभूमि में हुआ, जिसमें राष्ट्रवाद, मानव एकता और नैतिक पुनर्निर्माण प्रमुख विषय बने। इस परंपरा में गांधी एक निर्णायक विचारक के रूप में उभरते हैं, जिन्होंने सत्य, अहिंसा और कष्ट-सहन को केवल नैतिक आदर्श न मानकर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के प्रभावी साधन के रूप में प्रस्तुत किया। शोध में स्पष्ट किया गया है कि गांधी का राजनीतिक दर्शन पारंपरिक सत्ता-केंद्रित राज्य की आलोचना करता है और विकेंद्रीकरण, ग्राम स्वराज तथा सर्वोदय के माध्यम से व्यक्ति और समाज दोनों के नैतिक उत्थान पर बल देता है। उनके अनुसार साधन और साध्य के बीच अटूट संबंध है, तथा हिंसक साधनों से न्यायपूर्ण समाज की स्थापना संभव नहीं। यही दृष्टि भारतीय समाजवादी आंदोलन को एक विशिष्ट नैतिक आधार प्रदान करती है। भारतीय समाजवादी आंदोलन का विकास मुख्यतः बीसवीं शताब्दी में हुआ, जिस पर मार्क्सवाद और गांधीवाद दोनों का प्रभाव पड़ा। आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण और राममनोहर लोहिया जैसे समाजवादी नेताओं ने वर्ग-संघर्ष के अवधारणा की भारतीय सामाजिक यथार्थ, विशेषतः ग्रामीण शोषण और जाति-व्यवस्था आदि के संदर्भ में पुनर्व्याख्या की । इस आंदोलन ने राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक समानता, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना का लक्ष्य रखा। शोध निष्कर्षतः यह प्रतिपादित करता है कि भारतीय समाजवादी आंदोलन केवल पश्चिमी समाजवाद की नकल नहीं था, बल्कि गांधीवादी नैतिकता, अहिंसा और विकेंद्रीकरण से प्रेरित एक स्वदेशी समाजवादी चेतना का विकास था, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उत्तर-औपनिवेशिक राजनीतिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया।

मुख्य शब्द :- भारतीय समाजवादी आंदोलन, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, सत्य और अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय, विकेंद्रीकरण, सामाजिक न्याय, मार्क्सवाद, लोकतंत्र।

भारतीय समाजवादी आंदोलन और गांधी

"महात्मा गांधी (1869-1948) ने सत्य और अहिंसा जैसे शाश्वत नैतिक आदर्शों का सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में प्रयोग करके एक महान क्रान्ति की है और सामाजिक परिवर्तन तथा समस्या समाधान के नये आयाम सुझाएं हैं। उनके सत्याग्रह आन्दोलन को अद्भुत समाज वैज्ञानिक आविष्कार माना गया है।"[1] पहले उनका क्षेत्र धर्म तथा व्यक्तिक एवं पारिवारिक जीवन तक ही सीमित था किन्तु भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में उनके अद्भुत योगदान से व्यापक सार्वजनिक क्षेत्र में सत्याग्रह का प्रयोग तथा प्रभाव स्पष्ट हो चुका है तथा विभिन्न देशों के

Published: 05 February 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/IJSSR.2026.v3.i1.30814
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

नेता उसका अनेक क्षेत्रों में सक्रिय प्रयोग करने लगे हैं।

"गांधी का सबसे बड़ा आग्रह 'जान बोन्दुराँ के शब्दों, में लक्ष्यों और साधनों में उचित सम्बन्ध की स्थापना करने पर है।"[2.] यह एक ऐसी समस्या थी जिसे परम्परागत राजनैतिक दार्शनिक सुलझाने में सर्वथा असमर्थ रहे थे। गांधी से पहले इतने स्पष्ट शब्दों में यह किसी ने नहीं कहा था कि यदि हम अच्छे लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते हैं तो बुरे साधनों के द्वारा उन्हें कभी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। "गांधी ने 1909 में "हिन्द स्वराज्य" में लिखा, "आपका तर्क ऐसा है जैसे एक जहरीला पौधा लगाने के बाद हम गुलाब का फूल निकलने की आशा करें.....। साधनों की तुलना बीज से की जा सकती है एवं लक्ष्य का पेड से। हम ठीक वही काटते हैं जो बोते हैं।"[3.] "कई वर्षों के बाद उन्होंने लिखा, जैसे साधन होंगे वैसी ही उपलब्धि होगी । साधनों और परिणामों के बीच, उन्हें एक-दूसरे से अलग कर देने वाली कोई दीवार नहीं है। अच्छे लक्ष्य की प्राप्ति ठीक उसी मात्रा में होती है जिस मात्रा में अच्छे साधनों का प्रयोग किया जाता है। यह एक ऐसा सत्य है जिसका अपवाद हो ही नहीं सकता।"[4.] गांधी ने लिखा, "अहिंसा का अर्थ, उसके गत्यात्मक अर्थों में, जानबूझकर कष्ट सहना है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम बुरा काम करने वाले व्यक्ति के सामने विनम्रता के साथ घुटने टेक दे। इसका अर्थ तो यह है कि हम आततायी की इच्छा के विरोध में अपनी समस्त आत्मशक्ति को झोंक दें। यह हमारे अस्तित्व का तकाजा है, और इस नियम के अन्तर्गत काम करते हुए एक व्यक्ति के लिए भी यह सम्भव है कि वह अन्याय के आधार पर टिके हुए एक साम्राज्य की समस्त शक्ति को अकेला ही चुनौती दे सके ।"[5.]

गांधी ने सत्याग्रह की पद्धति में और निष्क्रिय प्रतिरोध की पद्धति में अन्तर किया है। इतिहास में निष्क्रिय प्रतिरोध का प्रयोग या तो हिंसा के प्रयोग में असमर्थता के कारण किया गया था, या हिंसा की ओर बढ़ने वाले एक प्रारम्भिक कदम के रुप में। 'कमजोर की हिंसा" का गांधी की दृष्टि में कोई महत्व नहीं था उन्होंने ऐसे लोगों की प्रशंसा की जो प्रभावशाली रुप में हिंसा का प्रयोग करने की स्थिति में थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, और अहिंसा का सहारा लेकर कष्ट सहने की अपनी तत्परता प्रकट की। निष्क्रिय प्रतिरोध का प्रयोग हथियारों के उपयोग के साथ-साथ किया जा सकता था । सत्याग्रह में यह सम्भव नहीं था। निष्क्रिय प्रतिरोध में प्रतिपक्षी को परेशान करने का विचार दिया हुआ था । सत्याग्रह में प्रतिपक्षी को हानि पहुँचाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। कायरता और हिंसा में से यदि एक को चुनना हो तो मेरी सलाह, सदा ही हिंसा को चुनने को होगी ।"[6.] इस वाक्य को गांधी जी ने बार-बार दुहराया है ।

"गांधी जी तत्व शास्त्रीय अर्थ में प्रत्ययवाद को स्वीकार करते थे इसलिए नैतिक मूल्यों की सर्वोच्चता तथा सर्वोदय में उनका विश्वास था । सर्वोदय दर्शन का आधार सत्ता की एकता का सिद्धान्त है। इसका निष्कर्ष है कि मानव प्राणियों तथा पशुओं के प्रति निर्दयता के विरुद्ध निरन्तर संघर्ष चलाया जाय । इस सिद्धान्त का मूल यजुर्वेद के इस मन्त्र में है: "ईशावास्यमिदं सर्वं" - सम्पूर्ण विश्व में ईश्वर व्याप्त है। गांधी का कथन है कि इस मन्त्र में समाजवाद और यहाँ तक कि साम्यवाद भी निहित है ।"[7.] प्रत्ययवादी दर्शन अनिवार्यतः शाश्वत सत्य तथा न्याय के मूल्यों का उपदेश देता है। वह लिखता है कि सार्वभौम प्रेम जीवन का एक मात्र नियम है। वह किसी एक वर्ग अथवा राष्ट्र के कल्याण से सन्तुष्ट नहीं हो जाता है, बल्कि वह सभी प्राणियों की मुक्ति तथा कल्याण का समर्थन करता है ।

गांधीजी धर्म को राजनीति में प्रविष्ट करना चाहते थे।" मेरे लिए मोक्ष का एकमात्र मार्ग यह है कि मैं देश तथा मानव जाति की सेवा के लिए निरन्तर परिश्रम करूं। मैं हर जीवित प्राणी के साथ एकात्म्य स्थापित करना चाहता हूं। गीता की भाषा में मैं अपने मित्रों तथा शत्रुओं दोनों के साथ शान्तिपूर्वक रहना चाहता हूँ । अतः मेरे लिए मेरी देशभक्ति शाश्वत स्वतन्त्रता तथा शान्ति के लोक की यात्रा की एक मंजिल है । इस प्रकार स्पष्ट है कि मेरे लिए धर्म

से शून्य राजनीति नहीं हो सकती । राजनीति धर्म के अधीन है। धर्म से शून्य राजनीति एक मृत्यु-जाल है, क्योंकि उससे आत्मा का हनन होता है।" किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे किसी प्रकार का धर्मतांत्रिक शासन स्थापित करना चाहते थे। उनका धर्म का अभिप्राय है - ईश्वर के साथ एकता कायम करना । वह एक प्रचण्ड शक्ति है। इसलिए राजनीति में धर्म का समाविष्ट करने का अर्थ था - न्याय तथा सत्य की ओर उत्तरोत्तर प्रगति करना, क्योंकि धार्मिक व्यक्ति किसी भी प्रकार के उत्पीड़न तथा शोषण को सहन नहीं कर सकता ।

“गांधी जी ने पाश्चात्य लोकतांत्रिक राजनीति की कटु भर्त्सना की, क्योंकि वह आपस में अंतर्विरोधी थे ।”[8] उसके अन्तर्गत पूंजीवाद का असीम प्रसार हुआ, जिसके फलस्वरुप दुर्बल जातियों का डटकर शोषण किया गया। कुछ लोकतांत्रिक राज्यों ने तो फासीवादी तरीके भी अपना लिये । “लोकतंत्र का जो व्यावहारिक रूप हमें आज देखने को मिलता है वह शुद्ध नात्सीवाद अथवा फासीवाद है । अधिक से अधिक वह साम्राज्यवाद की नात्सीवादी तथा फासीवादी प्रवृतियों को छिपाने का आवरण है।"[9] “गांधी जी ने स्पष्ट घोषणा की कि ब्रिटेन ने भारत को लोकतांत्रिक तरीकों से नहीं जीता था। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका तथा अमेरिका के दक्षिणी भागों में प्रचलित जातीय भेदभाव की नीति की आलोचना की । उनका कहना था कि केवल अहिंसा के द्वारा ही सच्चे लोकतंत्र की स्थापना की जा सकती है। राजनीति में लोकतन्त्र का अर्थ है कि विरोधियों के साथ पूर्णतः सम्यक व्यवहार किया जाय।”[10] “आर्थिक क्षेत्र में लोकतन्त्र का अभिप्राय है कि सबसे दुर्बल व्यक्ति को भी वही सुविधाएं मिलनी चाहिए जो सबसे शक्तिशाली को उपलब्ध हो ।”[11] “लोकतंत्र तथा हिंसा के बीच मेल नहीं हो सकता । वे चाहते थे कि भारत विकसित होकर "सच्चे लोकतन्त्र" का रूप धारण करे ।”[12] “वे यथार्थवादी थे। इसलिये उन्होंने यह युटोपियाई स्वप्न नहीं देखा कि भविष्य में भारत सैन्य बल का परित्याग कर देगा और पूर्ण अहिंसा को अपना लेगा। किन्तु वे चाहते थे कि हिंसा के बिना और क्रमिक रूप से सच्चे लोकतन्त्र को प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाय। शक्ति का विकेन्द्रीकरण उनके लोकतांत्रिक सिद्धांत का मुख्य तत्व था। उन्होंने भारत में सच्चे लोकतन्त्र को साक्षात्कृत करने के लिये कुछ सिद्धान्त निश्चित की थी।”[13] “वे इस बात को पूर्णतः अनुचित और अलोकतांत्रिक मानते थे कि व्यक्ति कानून को अपने हाथों में लें ।”[14]

गांधी जी राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में शक्ति तथा धन के केन्द्रीकरण को सब बुराईयों की जड़ मानते थे । उनका अहिंसक राज्य इसके बिलकुल विपरीत है। वर्तमान राज्य के अधिकारों में निरन्तर वृद्धि होने के कारण उसकी शक्ति का प्रबल केन्द्रीकरण हो रहा है। राज्य का अधिकार हिंसा और पाशविक शक्ति है। वह शक्ति का केन्द्रीकरण कर स्थानीय स्वशासन को कम कर देता है । इसलिए राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के अन्तर्गत ग्राम पंचायतों को स्वशासन के समस्त अधिकार दे दिए जाने चाहिए । इनके मामलों में राष्ट्रीय अथवा प्रांतीय सरकारों का हस्तक्षेप एवं नियन्त्रण नहीं होना चाहिए । इसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में केन्द्रीकरण व्यक्ति के विकास में अत्यन्त बाधक होते हैं। जब बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा उत्पादन किया जाता है तो उद्योगों का संचालन मुट्ठी भर पूंजीपतियों के हाथों में चला जाता है। उन्हीं के हाथों में समाज का धन भी केन्द्रित हो जाता है। “धन का असमान वितरण और संचय होने से शोषण, गरीबी, भुखमरी और आर्थिक विषमता बढ़ती चली जाती है। पूँजीपति अपने कारखानों के लिए अच्छा माल पाने तथा निर्मित माल हेतु बाजार प्राप्त करने के लिये साम्राज्य निर्माण में प्रवृत्त हो जाते हैं। राज्य इसी प्रवृत्ति से प्रेरित होकर कार्य करते हैं इससे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव, अशान्ति और महायुद्ध उत्पन्न होते हैं। इस व्यापक नग्न हिंसा को रोकने के लिए आर्थिक क्षेत्र में भी विकेन्द्रीकरण होना चाहिए तथा न्याय सिद्धान्त का अनुपालन करना चाहिए, जिसके अनुसार पूंजीपति अपने आप को जमीन, सम्पत्ति, कारखानों आदि का स्वामी न समझे, बल्कि उसे समाज की धरोहर या अमानत मानें। मनुष्य को उस सम्पत्ति में से आवश्यकतानुसार तथा परिश्रमानुसार अपना अंश लेने का अधिकार है। अतः गांधी वृहत मशीनी उद्योगों के स्थान पर लघु ग्रामोद्योग को प्रोत्साहित करते रहे।”[15]

गांधी जी ने आधुनिक सभ्यता के आधारों को ही चुनौती दी। आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता की कृत्रिमता, औद्योगिक प्रगति, आक्रामकता तथा लोलुपता से गांधी जी को घृणा थी । पश्चिम की औद्योगिक सभ्यता दुर्बल राज्यों के शोषण पर आधारित है। उसका जटिल भौतिक जीवन उच्च प्रकार के चिन्तन के प्रतिकूल हैं। इसलिए वह अन्धकार तथा महामारी के सदृश है । अतः प्लेटो, टॉलस्टॉय और रूसो की भाँति गांधीजी ने प्रकृति की ओर लौटने का सन्देश दिया और बतलाया कि सच्ची सभ्यता भोग-सामग्री का संचय करना नहीं है, जानबूझ कर और स्वेच्छा से अपनी आवश्यकताओं को कम करना वास्तविक सभ्यता है। गांधीजी राजनीति, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र को अध्यात्मिकता की ओर उन्मुख करने के पक्ष में थे । उनका कहना था कि सत्य और अहिंसा को समाजवाद के रूप में मूर्तिमान होना चाहिए क्योंकि अहिंसा की पहली शर्त यह है कि सर्वत्र तथा जीवन के हर क्षेत्र में न्याय की स्थापना की जाय । "किन्तु समाजवाद का पाश्चात्य सिद्धान्त हिंसा के वातावरण में उत्पन्न हुआ । सत्याग्रह ही सच्चा समाजवाद लाने का एक मात्र साधन है ।"[16]

गांधीजी ने जिन बुराईयों के विरूद्ध संघर्ष किया, उनमें "जातिवाद, नस्लवाद, साम्राज्यवाद, सम्प्रदायवाद तथा अस्पृश्यता" मुख्य थी । उनके अनुसार यह सम्भव नहीं है कि कोई व्यक्ति सक्रिय रुप से अहिंसक हो और फिर भी सामाजिक अन्यायों के विरूद्ध विद्रोह न करें । उन्होंने भारत के दलित वर्गों की मुक्ति के लिए जो कार्य किया उससे स्पष्ट है कि सामाजिक न्याय के आदर्शों के साथ उनका कितना लगाव था। किन्तु उनका पहला काम भारत के अन्यायपूर्ण आर्थिक तथा राजनीतिक शोषण का अन्त करना था। यही कारण है कि वे आर्थिक समानता के प्रबल समर्थक थे। इस दृष्टि से वे 'प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार' के मार्क्सवादी सिद्धान्त में विश्वास करते थे।"[17]

गांधी जी अपने आप को समाजवादी मानते थे। उनकी विचारधारा में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, सामाजिक न्याय, आदि को अत्यन्त ऊँचा स्थान प्रदान किया गया है। वे अपरिग्रह और न्याय सिद्धान्तों द्वारा आर्थिक विषमता का उन्मूलन करके आर्थिक समानता लाना चाहते थे । वे मानते थे कि समाजवाद हमें पूर्वजों से प्राप्त हुआ है। वे सिखा गए हैं कि समस्त भूमि गोपाल या परमात्मा की है। इसमें मेरी और तेरी जैसी कोई सीमाएं नहीं है। उनके अनुसार समाजवाद या साम्यवाद का विचार नवीन है। लुई फिशर से 1940 में वार्तालाप करते हुए गांधी ने कहा था कि "मैं सच्चा समाजवादी हूँ । मेरे समाजवाद का अर्थ है- सर्वोदय । वे किसानों, मजदूरों, गरीबों आदि सभी वर्गों का सभी प्रकार से कल्याण चाहते थे। वे उनके साथ होने वाले अन्याय, अत्याचार तथा आर्थिक शोषण को दूर करना चाहते थे । उद्देश्य की दृष्टि से गाँधीवाद और साम्यवाद में कोई अन्तर नहीं है, परन्तु साधन की दृष्टि से दोनों में जमीन आसमान का अन्तर है। प्रथम शान्तिवादी व अहिंसक साधनों का समर्थक है तो दूसरा हिंसात्मक साधनों का समर्थक । गाँधीवादी समाजवाद मूलतः आध्यात्मिक है तो दूसरा भौतिक । साम्यवादी समाजवाद वर्ग-संघर्ष पर बल देता है तो गाँधीवाद आपसी सहयोग पर । साम्यवादी समाजवाद में उत्पादन के साधनों के राष्ट्रीयकरण पर बल देता है तो गाँधीवादी समाजवाद विकेन्द्रीकरण पर । अन्त में साम्यवादी समाजवाद सर्वहारा वर्ग के उत्थान एवं पूंजीपति वर्ग के उन्मूलन की बात करता है तो गाँधीवादी समाजवाद गरीबों, निम्न वर्गों आदि के उत्थान के साथ-साथ पूँजीपतियों के भी उत्थान और उससे निर्मित सम्पत्ति को न्यायपूर्वक सम्पूर्ण समाज के कल्याण हेतु प्रयोग करने पर बल देता है ।

महात्मा गांधी के इन्हीं समाजवादी एवं सर्वोदयी विचारधारा ने सम्पूर्ण भारतवासी के हृदय में एक भीषण आन्दोलन खड़ा कर दिया जिसने प्रत्येक भारतीयों को सच्चा सत्याग्रही बनने के लिए विवश कर दिया । सम्पूर्ण भारतीय जनमानस पर इसका अटूट प्रभाव पड़ा। लोग गांधी के दर्शन हेतु उमड़ पड़ते थे। दलित व गरीब वर्ग ने उन्हें मसीहा स्वीकार कर लिया। गांधी के इस विशाल व्यक्तित्व के प्रभाव में अनेक समाजवादी युवक आगे आये । इन समाजवादी युवकों में आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया तथा जवाहरलाल नेहरु आदि प्रमुख थे । इनकी प्रेरणा व क्षमता ने एक नए आन्दोलन का सूत्रपात किया जिसने दलितों, गरीबों, अछूतों आदि के

शोषणोद्धार का व्रत लिया । प्रायः इन समाजवादियों पर प्रारम्भिक प्रभाव मार्क्स का रहा, परन्तु भारतीय समाजवाद के नायक गांधी का उन पर प्रभाव पड़े बिना न रह सका। इस प्रकार भारतीय समाजवादी आन्दोलन पर मार्क्सवाद व गाँधीवाद का बराबर का असर रहा ।

समाजवादी दल के नेताओं में नरेन्द्र देव तथा जय प्रकाश नारायण पर मार्क्सवाद का सबसे अधिक प्रभाव था । उसकी तुलना में लोहिया पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव अधिक था । मार्क्स का अनुसरण करते हुए जर्मनी के मार्क्सवादियों ने किसानों को प्रतिक्रियावादी तत्व माना था। लेनिन ने इस दृष्टिकोण में संशोधन किया । भारत में मूल शोषित तत्व मजदूरी भोगी श्रमिक वर्ग नहीं है। गांव के भूमिहीन मजदूर तथा किसान इस देश के सर्वाधिक शोषित वर्ग हैं। अतः ग्रामवासियों की समस्याओं का विश्लेषण करना आवश्यक है । भारतीय समाजवादी प्रचलित जाति संघर्ष तथा वर्ग-संघर्ष का अन्त करना चाहते थे। वे नियोजन को स्वीकार करते हैं, किन्तु वे समग्र और निरपेक्ष नियोजन के स्थान पर खण्डशः नियोजन के पक्षपाती हैं। भारत में पूंजी के निर्माण की समस्या बड़ी विकट हैं । बचत के अतिरिक्त विदेशी ऋण भी पूंजी के निर्माण का एक महत्वपूर्ण साधन है किन्तु विदेशी ऋण राजनीतिक शर्तों से मुक्त होना चाहिए। भारतीय समाजवादियों ने अविकसित अर्थतन्त्र में किसानों की भूमिका, वर्ग संघर्ष तथा नियोजन इन तीन प्रमुख समस्याओं पर गम्भीर चिन्तन किया है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में समाजवादियों ने गांधी जी के नेतृत्व को स्वीकार किया। गांधी की जनमानस में पैठ तथा उनके सामाजिक व आर्थिक समानता के दर्शन ने भारतीय समाजवादियों को भी प्रेरणा प्रदान की। समाजवादी आन्दोलन भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के झण्डे के नीचे ही विकासमान रहा, इस दृष्टि से समाजवादियों ने काग्रेसियों से कंधे से कंधा मिलाकर, भारतीय स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न किये और संघर्षरत रहे। आचार्य नरेन्द्र देव तथा जय प्रकाश नारायण ने मार्क्सवाद से प्रभावित होते हुए भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरोध हेतु गाँधीजी द्वारा संचालित व निर्देशित कांग्रेस के कार्यक्रमों के अन्तर्गत ही कार्य किया और उन्होंने "असहयोग आन्दोलन" से लेकर "भारत छोड़ो आन्दोलन" तक गांधी के नेतृत्व को स्वीकारा ।

जर्मन समाजवादी लोकतन्त्रवादियों की भाँति "भारतीय समाजवादी भी राजनीतिक स्वतन्त्रता तथा आर्थिक पुनर्निर्माण का समन्वय करना चाहते हैं। उन्हें गाँधीजी की ही भाँति संसदीय तरीकों में विश्वास है । गाँधीवाद तथा भारतीय शासन की लोकतांत्रिक व्यवस्था के फलस्वरुप उन्होंने हिंसा में विश्वास का पूर्णतः परित्याग कर किया है। किन्तु पाश्चात्य समाजवादियों के विपरीत वे विकेन्द्रीकरण की धारणा के अधिक उग्र समर्थक हैं। कदाचित विकेन्द्रीकरण पर यह जोर भारतीय समाजवाद को गाँधीवाद से विरासत के रुप में मिला है।

निष्कर्ष

गाँधीवादी विचारधारा में जीवन के आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि सभी पक्षों का समुचित विवेचन हुआ है। यह व्यक्ति के गरीमा, विकास और महत्व पर बल देता है। उसका उद्देश्य राज्य की शक्ति को कम करना और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को सबल बनाना है। यह लगभग सभी प्रकार के परिवर्तन व्यक्ति की स्वेच्छा और आत्मनिर्णय के माध्यम से करना चाहता है और उसके लिए सभी प्रकार के कष्ट सहन करने को भी तैयार रहता है। बहुत कम राजनीतिक विचारकों ने रचनात्मक क्षेत्र में इस सीमा तक इतनी अधिक सफलता के साथ कार्य करके दिखाया है। यही कारण है कि गाँधीवाद कोई राजनीतिक सिद्धान्त नहीं है, वह एक संदेश है, एक जीवन-दर्शन है। उनकी शिक्षाओं की व्यापकता के कारण ही गाँधीवाद, समाजवाद और लोकतन्त्र का नैतिक आधार बन जाता है । यद्यपि व्यवहार और प्रतिपादन में गांधी जी ने अपने आदर्शों, सिद्धान्तों और विचारों में जबरदस्त दृढ़ता का प्रतिपादन किया है फिर भी उनका सत्य विकासशील है। उन्होंने कहा था कि गाँधीवाद नाम की कोई चीज नहीं है। मेरे जो मत हैं और जिन परिणामों पर मैं पहुंचा हूँ वे अन्तिम नहीं है, इस प्रकार यह विचारधारा

अधिकांश पश्चिमी विचारधाराओं से विशिष्ट है। उसमें पर्याप्त लोचशीलता, अनुकूल क्षमता, लोकतन्त्रात्मकता एवं मानवीयता पायी जाती हैं। अपने इसी गुण के कारण गांधी जी की मृत्यु के बाद भी गाँधीवाद विकासशील अवस्था में पाया जाता है। राजनीतिक क्षेत्र में जवाहरलाल नेहरु, आध्यात्मिक क्षेत्र में विनोबा भावे और रचनात्मक राजनीति तथा सामाजिक क्षेत्र में जय प्रकाश नारायण तथा अन्य लोगों को दिशा में आगे बढ़ते देखा जाना वस्तुतः इसी का परिचायक रहा है ।

संदर्भ सूची

1. जे० बन्धोपाध्याय, माओत्से तुंग एण्ड गांधी - परस्पेक्टिव (एलाईड पब्लिशर्स, 1973), पी० 188-199 आन सोशल ट्रांस फॉर्मेशन ।
2. जौन बाँडयूरा , कान्क्वेरट ऑफ वायलेंस, दि गाँधियन फिलासफी ऑफ कान्फ्लिक्टस बर्कले और लास एंजेल्स, केलिफॉर्निया विश्वविद्यालय प्रेस, 1965 ।
3. कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार दिल्ली, 1963, खण्ड 10 ।
4. यंग इण्डिया 17 जुलाई 1934 ।
5. यंग इण्डिया अगस्त 1920 ।
6. यंग इण्डिया, 1920-1924 ।
7. हरिजन, फरवरी. 2, 1937 ।
8. हरिजन, मई 1940
9. वही ।
10. यंग इण्डिया अगस्त 1920 1
11. हरिजन, 18, मई 1940
12. वही ।
13. वही ।
14. हरिजन, सितम्बर 21, 1947 ।
15. वी० पी० वर्मा नेवर, मॉरल मेन ऐण्ड इममार्टल सोसाईटी, 1937, पृ. 221-300 । वी० पी० वर्मा, द पोलिटकल फिलासफी ऑफ महात्मा गांधी एण्ड सर्वोदय "आगरा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल 1965" पृ० 231-247,।
16. हरिजन, जुलाई 1920 ।
17. हरिजन, मार्च 31, 1946 ।